THE MINISTER OF LAW AND SOCIAL WELFARE (SHRI GOVINDA MENON): That order has been cancelled.

SHRI N. SHIVAPPA: I think it has been stayed.

SHRI GOVINDA MENON: After staying it has been cancelled.

SHRI N. SHIVAPPA: If it is cancelled, well and good. I hope the government will give a direction to their officers that hereafter such orders should not be issued very arbitrarily in respect of these unfortunate people.

15.00 hrs.

Now I have to give some suggestions with regard to handicrafts. We have taken these unfortunate illiterate people as fit for nothing. Literacy and education are two different things, according to great scientists. Our forefathers, the Aryans who have come to this country, they were not literate. They were passing on information from mouth to mouth. There is a Sanskrit sloka that they were teaching things from mouth to mouth. That was one type of education. Merely because a man in India does not have any qualifications and he is not literate, it does not mean that he is uneducated. He is educated in the sense that he has not certain original techniques with him. For example, the tribal people in Nagaland, Manipur, Khasi and Jaintia hills have a wonderful craft with them of making certain things, certain small things in the rural industries, which the government and the department and the society know. If they have been given the incentive and impetus, the productive capacity of the rural industries would have improved. But that has not been done.

Now you have nationalised the banks. You have ample money. You have sufficient funds with you. have also a big slogan that you are for the people. You can do anything with that money. You can build the nation in one day. You could build Rome in one day. But will you build it at least before 1972? Please do it earlier.

You say you are in favour of the poor man. But let that sympathy not be as in the case of co-operatives. In the case of the co-operatives, 23½ per cent of the Central and State funds have been misused by your own representatives and their henchmen as favouritism and things of that sort. Similarly the funds of the banks should not be misused by your henchmen and the colleagues of the politicians. Let that money go to those poor people who deserve it. These crafts should be encouraged. These people should be given all help. Let there be hostels for men and women; let the money go to them. Let there be a law which will give them protection. Let there be a law which will punish those officials who oppress and suppress these poor people.

Finally, I am sorry I have to make this unfortunate remark that this service has become a fertile field for political patronage, corruption, favouritism and ruthless exploitation of the people for the various needs of the political parties, including my party. Do not encourage this kind of misuse and exploitation of the unfortunate brothers. Remember Bapuji; do not kill Bapuji and his ideals.

15.05 hrs.

PERSONAL EXPLANATION BY MEMBER

श्री मधु लिमये (मुंगेर) : सभापति महोदय, मैं आज दोपहर यहां था नहीं जब ध्यान आकर्षण प्रस्ताव पर कुछ सदस्यों के द्वारा यहां पर मेरे बारे में कुछ बाते कही गई। मैं सिर्फ तीन बातें कहना चाहता हूं। पहले मेरा यह कहना है कि किसी भी कमेटी की रपट पर आलोचना करने का इस सदन को और इस सदन के सदस्यों को अधिकार है। उसका जवाब सरकार की तरफ से दिया जा सकता है या सदस्य स्वयं उसका जवाब दे सकते हैं। लेकिन मैंने यह कभी नहीं देखा कि कमेटी स्वयंम् एक बयान के द्वारा उस आलोचना का खण्डन करती है। सरकार कमेटी ने जो यह काम किया है वह बहुत ही गैर-मुनासिब और अनुचित है। मैं यह कहना चाहता हूं कि कमेटी के टर्म्स आफ रिफरेंस में कभी भी इस बात का समावेश

[श्री मधु लिमये]

नहीं हुआ था कि वह इस तरह का बयान देंगे। जिस दिन मैंने मूल रपट में बड़े पैमाने पर संशोधन करने की बात की थी उस समय मैंने मूल रपट सदन के सामने रक्खी थी और मांग की थी कि मन्त्री महोदय जल्दी सी०एस० आई० आर० और उसकी रपट पर बहस करने का मौका सदन को दें। राव साहब के प्रस्ताव का नोटिस आया और स्पीकर साहब ने उसे मंजूर किया। ऐसी हालत में आज कालिंग अटेंशन के नाम पर बहस में इस तरह की बातें कहना मेरे ख्याल में अनुचित है और, सभापति महोदय, आप उसको रोकें। मैं सरकार से कहना चाहता हूं कि जल्दी ही हम को इस पर बहस करने का मौका दिया जाये।

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि सरकार साहब ने अगर इस्तीफा दिया है तो कोई कारण नहीं दिया है। मैं चाहूंगा कि वह अपने इस्तीफे पर डटे रहे, इस्तीफा वापस न लें। इसमें इस्तीफा वापस लेने की क्या बात है? उन्होंने बहुत अनुचित बात की है इसलिये उनका इस्तीफा वापस नहीं होना चाहिये।

तीसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि भविष्य में सरकार किसी भी सेवा-निवृत्त जज को, चाहे वह हाईकोर्ट का हो या सुप्रीम कोर्ट का, इस प्रकार कमिशन देने का काम न करे, क्योंकि अमीचन्द प्यारेलाल के मामले में सरकार कमेटी की जो रिपोर्ट आई है उसका मैं ने बहुत गौर से अध्ययन किया है। मैं कहना चाहता हूं कि उस मामले को उन्होंने बिगाड़ दिया है। सी० एस० आई० आर० के मामले को भी बिगाड़ दिया है, इसलिये हमारे कुछ सदस्यों को मिनट आफ डिसेंट देना पड़ा। यहां आकर कुछ सरकार साहब की तारीफ करने की बात की गई है लेकिन मिनिट आफ डिसेंट से मामला साफ होता है कि रपट में किस प्रकार हेरा फेरी की गई है।

इसलिये मैं सरकार से आश्वासन चाहता हूं कि भविष्य में किसी भी सेवा निवृत्त जज को इस तरह कमिशन देने का काम नहीं किया जायेगा क्योंकि जो जज सरकार के इशारे पर आ जाते हैं उन्हीं को कमिशन मिलता है, जो स्वतन्त्र-बुद्धि हों ऐसे जजों को कोई कमिशन नहीं दिया जाता।

सभापति महोदय: मैं एक बात कहना चाहता हूं। आज चूंकि अध्यक्ष महोदय ने एक माननीय सदस्य को बिना अपना लिखित वक्तव्य भेजे हुए स्पष्टीकरण देने की अनुमति दे दी थी, इसलिये श्री मधु लिमये को भी इस की अनुमति दी गई है। लेकिन भविष्य में. . .

श्री मधु लिमये: मैं कभी नहीं देता। मैं हमेशा लिखित वक्तव्य देता हूं।

सभापति महोदय: भविष्य के लिये यह नियम होगा कि उसी माननीय सदस्य को स्पष्टीकरण की अनुमति मिलेगी जो पहले लिखित रूप में अपने वक्तव्य की कापी भेज देगा।

DEMANDS FOR GRANTS, 1970-71 *contd.*

DEPARTMENT OF SOCIAL WELFARE—*contd.*

15.05 hrs.

SHRI A. K. KISKU (Jhargram): Mr. Chairman, Sir, while approving of the demand of the Social Welfare Department I would like to express my greatest dis-satisfaction and unhappiness of the affairs of this Department. We are critically discussing the various concessions, various facilities that have been given to these downtrodden people, and on this occasion I remember those great leaders of our country who had fought for these down-trodden people, like Dr. Ambedkar, Shri Jaipal Singh and so on and so forth.

AN HON. MEMBER: He is gone.

SHRI A. K. KISKU: Somebody was just remarked that he is gone. I would like